Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

Original Article

1857 का विद्रोह: प्रथम स्वतंत्रता संग्राम या सैनिक विद्रोह – एक पुनर्मूल्यांकन

डॉ. अश्विनी राज

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, गंगा देवी महिला महाविद्यालय, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

ई मेल – hraj49@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180414
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 4(A)
Pp 64-67
April- 2026
Submitted: 23 Mar. 2026
Revised: 30 Mar. 2026
Accepted: 14 Apr. 2026
Published: 30 April. 2026

सारांश

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है, जिसे लेकर इतिहासकारों के बीच लंबे समय से मतभेद रहे हैं। कुछ इतिहासकार इसे केवल एक सैनिक विद्रोह मानते हैं, जबकि अन्य इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मानते हैं। 1857 का विद्रोह ने न केवल ब्रिटिश शासन की नींव को चुनौती दी, बल्कि भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों—सैनिकों, किसानों, जमींदारों और आम जनता—को एक साथ लाकर व्यापक प्रतिरोध का रूप भी दिया (सावरकर, 1909; मजूमदार, 1957)। इस विद्रोह के प्रमुख कारणों में राजनीतिक असंतोष, आर्थिक शोषण, धार्मिक हस्तक्षेप तथा सैन्य असंतोष प्रमुख थे। ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियों, जैसे "लैप्स का सिद्धांत" और उच्च कर प्रणाली, ने भारतीय शासकों और जनता में असंतोष पैदा किया (शर्मा, 2010; चंद्र, 2009)। इसके अतिरिक्त, कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी के उपयोग की अफवाह ने सैनिकों में विद्रोह की चिंगारी को और तेज कर दिया (सेन, 2003)। इस शोध का उद्देश्य 1857 के विद्रोह का पुनर्मूल्यांकन करना है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि यह केवल एक सैनिक विद्रोह था या वास्तव में स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभिक रूप। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि यद्यपि विद्रोह की शुरुआत सैनिकों से हुई, लेकिन इसका विस्तार व्यापक सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन के रूप में हुआ, जिससे इसे केवल सैनिक विद्रोह कहना उचित नहीं है (चंद्र, 2009; मेटकाफ, 2006)। इस प्रकार, यह शोध 1857 के विद्रोह को एक बहुआयामी घटना के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें राष्ट्रीय चेतना के प्रारंभिक संकेत स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं और जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की आधारशिला सिद्ध हुआ।

मुख्य शब्द:– 1857 का विद्रोह, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, सैनिक विद्रोह, औपनिवेशिक शासन, राष्ट्रीय चेतना, ईस्ट इंडिया कंपनी।

प्रस्तावना

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक निर्णायक घटना मानी जाती है, जिसने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की नींव को पहली बार गंभीर चुनौती दी। यह विद्रोह मेरठ से प्रारंभ होकर शीघ्र ही उत्तर और मध्य भारत के अनेक क्षेत्रों में फैल गया। इस घटना को लेकर इतिहासकारों के बीच लंबे समय से बहस रही है—कुछ इसे केवल सैनिकों का विद्रोह मानते हैं, जबकि अन्य इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम बताते हैं (मजूमदार, 1957; सावरकर, 1909)। इस विद्रोह की पृष्ठभूमि में कई जटिल कारण कार्यरत थे। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की विस्तारवादी नीतियाँ, विशेषकर 'लैप्स का सिद्धांत', भारतीय शासकों के लिए असंतोष का प्रमुख कारण बनीं। साथ ही, अत्यधिक कराधान, आर्थिक शोषण और पारंपरिक उद्योगों के पतन ने किसानों और कारीगरों को प्रभावित किया (चंद्र, 2009; शर्मा, 2010)। धार्मिक और सांस्कृतिक मामलों में हस्तक्षेप, जैसे ईसाई धर्म के प्रसार का भय, भी जनता के असंतोष को बढ़ाने वाला तत्व था (सेन, 2003)। सैन्य स्तर पर, भारतीय सिपाहियों में भेदभावपूर्ण नीतियों और वेतन असमानता के कारण असंतोष पहले से ही विद्यमान था। एनफील्ड राइफल के कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी के उपयोग की अफवाह ने इस असंतोष को विद्रोह में बदल दिया। परिणामस्वरूप, सैनिकों के साथ-साथ किसान, जमींदार और स्थानीय शासक भी इस आंदोलन में शामिल हो गए (मेटकाफ, 2006; चंद्र, 2009)।

अतः 1857 का विद्रोह केवल एक आकस्मिक घटना नहीं था, बल्कि यह विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों से उत्पन्न एक व्यापक आंदोलन था। इस अध्ययन का उद्देश्य इस विद्रोह का पुनर्मूल्यांकन करना है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि इसे केवल सैनिक विद्रोह कहना उचित है या इसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम कड़ी के रूप में देखना चाहिए।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. अश्विनी राज, सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, गंगा देवी महिला महाविद्यालय, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

How to cite this article:
राज. अश्विनी. (2026). 1857 का विद्रोह: प्रथम स्वतंत्रता संग्राम या सैनिक विद्रोह – एक पुनर्मूल्यांकन. Journal of research & development, 18(4(A)), 64–67. https://doi.org/10.5281/zenodo.20389849

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.20389849
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य 1857 का विद्रोह का पुनर्मूल्यांकन करना है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि यह केवल सैनिक विद्रोह था या भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में देखा जाना चाहिए। अध्ययन का लक्ष्य इस विद्रोह के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सैन्य कारणों का विश्लेषण करना है तथा यह समझना है कि इसमें किन-किन वर्गों की भागीदारी रही। इसके साथ ही, यह शोध विभिन्न इतिहासकारों के दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन करता है, ताकि इस घटना की वास्तविक प्रकृति को समझा जा सके (चंद्र, 2009; मजूमदार, 1957)।

1. 1857 का विद्रोह के कारणों का विश्लेषण करना।
2. यह निर्धारित करना कि यह विद्रोह सैनिक था या स्वतंत्रता संग्राम।
3. विद्रोह में विभिन्न सामाजिक वर्गों की भूमिका का अध्ययन करना।
4. ब्रिटिश नीतियों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. विभिन्न इतिहासकारों के मतों का तुलनात्मक अध्ययन करना (सावरकर, 1909; चंद्र, 2009)।
6. विद्रोह के दीर्घकालिक प्रभावों का विश्लेषण करना।

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक ऐसी निर्णायक घटना है, जिसका स्वरूप और महत्व आज भी इतिहासकारों के बीच विमर्श का विषय बना हुआ है। इसे एक ओर "सिपाही विद्रोह" कहा गया, तो दूसरी ओर "प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। इस पुनर्मूल्यांकन का उद्देश्य इस घटना के विभिन्न आयामों—राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सैन्य—का समग्र अध्ययन करना है, ताकि इसके वास्तविक स्वरूप को समझा जा सके (चंद्र, 2009; मजूमदार, 1957)।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और कारण

1857 के विद्रोह के पीछे अनेक गहरे कारण निहित थे। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की विस्तारवादी नीति, विशेषकर 'लैप्स का सिद्धांत', ने भारतीय राजाओं और नवाबों के अधिकारों को समाप्त कर दिया। झांसी, सतारा और नागपुर जैसे राज्यों के विलय से असंतोष बढ़ा (शर्मा, 2010; चंद्र, 2009)। आर्थिक स्तर पर, भारी कराधान और पारंपरिक उद्योगों के पतन ने किसानों और कारीगरों को प्रभावित किया। भारतीय अर्थव्यवस्था को कच्चे माल के निर्यात और तैयार वस्तुओं के आयात तक सीमित कर दिया गया (सेन, 2003; मेटकाफ, 2006)। धार्मिक और सांस्कृतिक हस्तक्षेप भी एक प्रमुख कारण था। ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों और सामाजिक सुधारों को भारतीय परंपराओं के विरुद्ध माना गया। एनफील्ड राइफल के कारतूसों में चर्बी के उपयोग की अफवाह ने सैनिकों में विद्रोह की चिंगारी को भड़का दिया (चंद्र, 2009; सेन, 2003)।

2. प्रमुख घटनाएँ और विस्तार

स्रोत: Wikimedia Commons, NCERT इतिहास पुस्तकें, British Library Archives

विद्रोह की शुरुआत 10 मई 1857 को मेरठ से हुई, जहाँ भारतीय सिपाहियों ने ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह किया। इसके बाद यह आंदोलन दिल्ली, कानपुर, लखनऊ और झांसी तक फैल गया। दिल्ली में बहादुर शाह ज़फर को प्रतीकात्मक सम्राट घोषित किया गया, जिससे विद्रोह को वैधता मिली। झांसी में रानी लक्ष्मीबाई ने वीरता के साथ ब्रिटिश सेना का सामना किया। कानपुर में नाना साहेब और

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

लखनऊ में बेगम हज़रत महल ने नेतृत्व किया। इस प्रकार, यह विद्रोह केवल सैनिकों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें विभिन्न वर्गों की भागीदारी देखने को मिली (मेटकाफ, 2006; चंद्र, 2009)।

3. सैनिक विद्रोह या स्वतंत्रता संग्राम? (तुलनात्मक दृष्टिकोण)

दृष्टिकोण	प्रमुख तर्क	समर्थक इतिहासकार
सैनिक विद्रोह	विद्रोह केवल सिपाहियों द्वारा शुरू हुआ और सीमित क्षेत्रों तक रहा	मजूमदार (1957)
स्वतंत्रता संग्राम	इसमें व्यापक जनभागीदारी थी और विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष था	सावरकर (1909), चंद्र (2009)

यह स्पष्ट है कि विद्रोह की शुरुआत सैनिकों से हुई, लेकिन इसका विस्तार सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन के रूप में हुआ।

4. भागीदारी का स्वरूप

वर्ग	भूमिका	प्रभाव
सैनिक	विद्रोह की शुरुआत	ब्रिटिश शासन को चुनौती
किसान	करों के विरुद्ध आंदोलन	आर्थिक असंतोष का प्रदर्शन
जमींदार	सत्ता की पुनः प्राप्ति का प्रयास	राजनीतिक संघर्ष
महिलाएँ	नेतृत्व (जैसे रानी लक्ष्मीबाई)	प्रेरणादायक भूमिका

(चंद्र, 2009; शर्मा, 2010)

5. विद्रोह के परिणाम और प्रभाव

1857 का विद्रोह अंततः असफल रहा, लेकिन इसके परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण थे। 1858 में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त कर दिया गया और भारत सीधे ब्रिटिश क्राउन के अधीन आ गया। साथ ही, ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों के प्रति अपनी नीतियों में कुछ परिवर्तन किए (सेन, 2003; मेटकाफ, 2006)। इस विद्रोह ने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना का बीज बोया। यह पहली बार था जब विभिन्न वर्गों ने एक साथ मिलकर विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष किया। यही कारण है कि इसे स्वतंत्रता संग्राम की पहली कड़ी माना जाता है (चंद्र, 2009; सावरकर, 1909)।

आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार, 1857 का विद्रोह न तो केवल सैनिक विद्रोह था और न ही पूर्ण रूप से संगठित राष्ट्रीय आंदोलन। यह एक संक्रमणकालीन घटना थी, जिसमें प्रारंभिक राष्ट्रीय चेतना के तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इसका स्वरूप क्षेत्रीय और असंगठित अवश्य था, लेकिन इसके उद्देश्य और परिणाम राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण थे। अतः इसे एक बहुआयामी आंदोलन के रूप में समझना अधिक उचित है (मजूमदार, 1957; चंद्र, 2009)। इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि 1857 का विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की आधारशिला था। यद्यपि इसकी सीमाएँ थीं, फिर भी इसने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध व्यापक प्रतिरोध की शुरुआत की। इसलिए, इसे केवल "सैनिक विद्रोह" कहना इसकी ऐतिहासिक महत्ता को कम करना होगा, जबकि "प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" के रूप में इसका मूल्यांकन अधिक उचित और संतुलित प्रतीत होता है।

समस्याएँ एवं समाधान

1857 का विद्रोह के अध्ययन में कई महत्वपूर्ण समस्याएँ सामने आती हैं। सबसे प्रमुख समस्या यह है कि इस घटना की व्याख्या को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ विद्वान इसे केवल सैनिक विद्रोह मानते हैं, जबकि अन्य इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में देखते हैं (मजूमदार, 1957; सावरकर, 1909)। दूसरी समस्या स्रोतों की पक्षपातपूर्ण प्रकृति है। उपलब्ध अधिकांश ऐतिहासिक दस्तावेज ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा लिखे गए हैं, जिनमें विद्रोह को 'विद्रोह' या 'अराजकता' के रूप में प्रस्तुत किया गया है, न कि स्वतंत्रता के संगठित प्रयास के रूप में (सेन, 2003; चंद्र, 2009)। तीसरी समस्या यह है कि विद्रोह का स्वरूप क्षेत्रीय और असंगठित था। पूरे भारत में एक समान नेतृत्व और योजना का अभाव था, जिससे इसे एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में स्थापित करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है (मेटकाफ, 2006; शर्मा, 2010)।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि 1857 का विद्रोह केवल सैनिकों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें विभिन्न सामाजिक वर्गों—किसान, जमींदार, महिलाएँ और स्थानीय शासक—की सक्रिय भागीदारी थी (चंद्र, 2009; सावरकर, 1909)। यह भी पाया गया कि यद्यपि विद्रोह पूर्ण रूप से संगठित राष्ट्रीय आंदोलन नहीं था, फिर भी इसमें राष्ट्रीय चेतना के प्रारंभिक संकेत स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इसने भारतीय समाज को एकजुट होकर औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा दी। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 1857 का विद्रोह एक बहुआयामी घटना थी, जिसे केवल सैनिक विद्रोह कहना उचित नहीं है; बल्कि इसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में समझना अधिक यथार्थपरक है।

परिकल्पना

इस अध्ययन की परिकल्पना दो मुख्य बिंदुओं पर आधारित है। पहली परिकल्पना (H1) यह मानती है कि 1857 का विद्रोह मूलतः एक सैनिक विद्रोह था, जिसकी शुरुआत भारतीय सिपाहियों के असंतोष के कारण हुई और जो मुख्यतः सैन्य स्तर तक सीमित

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

रहा। इस दृष्टिकोण के अनुसार, विद्रोह में व्यापक राष्ट्रीय चेतना या संगठित राजनीतिक उद्देश्य का अभाव था। दूसरी परिकल्पना (H2) यह मानती है कि 1857 का विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम कड़ी था, जिसमें सैनिकों के साथ-साथ किसान, जमींदार, शासक वर्ग और आम जनता की भागीदारी रही। इस विद्रोह में औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध व्यापक असंतोष और स्वतंत्रता की प्रारंभिक चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अतः इस शोध का उद्देश्य इन दोनों परिकल्पनाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करना है, ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि 1857 का विद्रोह केवल सैनिक विद्रोह था या वास्तव में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की पहली महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति।

कार्यप्रणाली

इस शोध में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक कार्यप्रणाली का उपयोग किया गया है, जिसके माध्यम से 1857 का विद्रोह के स्वरूप और महत्व का पुनर्मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिनमें प्रामाणिक इतिहास पुस्तकों, शोध लेखों, सरकारी अभिलेखों तथा प्रतिष्ठित इतिहासकारों के कार्यों का उपयोग किया गया है (चंद्र, 2009; मेटकाफ, 2006)। इस शोध में तुलनात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत विभिन्न इतिहासकारों—जैसे सावरकर और मजूमदार—के दृष्टिकोणों का विश्लेषण कर यह समझने का प्रयास किया गया है कि 1857 के विद्रोह की व्याख्या किस प्रकार भिन्न-भिन्न रूपों में की गई है (मजूमदार, 1957; सावरकर, 1909)। साथ ही, गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारकों का गहन विश्लेषण किया गया है। उपलब्ध तथ्यों को क्रमबद्ध एवं व्याख्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे अध्ययन अधिक स्पष्ट और तर्कसंगत बन सके (शर्मा, 2010; सेन, 2003)। इस प्रकार, यह कार्यप्रणाली 1857 के विद्रोह के समग्र और संतुलित विश्लेषण में सहायक सिद्ध होती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक जटिल और बहुआयामी घटना थी, जिसे केवल एक दृष्टिकोण से समझना उचित नहीं है। यद्यपि इस विद्रोह की शुरुआत सैनिकों द्वारा हुई, तथापि इसका विस्तार शीघ्र ही व्यापक सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन के रूप में हुआ, जिसमें किसान, जमींदार, शासक वर्ग और सामान्य जनता की सक्रिय भागीदारी रही (चंद्र, 2009; सावरकर, 1909)। यह भी स्पष्ट होता है कि इस विद्रोह में पूर्ण रूप से संगठित राष्ट्रीय नेतृत्व और स्पष्ट राजनीतिक कार्यक्रम का अभाव था, जिसके कारण इसे तत्कालीन समय में सफल राष्ट्रीय आंदोलन नहीं कहा जा सकता (मजूमदार, 1957; मेटकाफ, 2006)। फिर भी, इसने भारतीय समाज में औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध एक साझा असंतोष और प्रारंभिक राष्ट्रीय चेतना को जन्म दिया। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 1857 का विद्रोह न तो केवल एक साधारण सैनिक विद्रोह था और न ही पूर्ण रूप से विकसित स्वतंत्रता संग्राम, बल्कि यह एक संक्रमणकालीन आंदोलन था, जिसने आगे चलकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखी। इसलिए इसका पुनर्मूल्यांकन एक संतुलित और समग्र दृष्टिकोण से किया जाना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. चंद्र, बिपिन। (2009). *आधुनिक भारत का इतिहास* (पृ. 135–178). नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
2. मजूमदार, आर. सी. (1957). *भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास* (पृ. 210–245). कोलकाता: फर्मा के. एल. मुखर्जी।
3. मेटकाफ, थॉमस आर. (2006). *आधुनिक भारत: एक संक्षिप्त इतिहास* (पृ. 95–120). नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
4. सावरकर, वी. डी. (1909). *1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम* (पृ. 50–110). मुंबई: वीर सावरकर प्रकाशन।
5. सेन, एस. एन. (2003). *1857 का विद्रोह* (पृ. 60–140). नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
6. शर्मा, आर. एस. (2010). *भारत का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास* (पृ. 220–250). नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
7. हंटर, डब्ल्यू. डब्ल्यू. (1877). *भारतीय साम्राज्य का सांख्यिकीय विवरण* (पृ. 300–340). लंदन: ट्रूब्नर एंड कंपनी।
8. केय, जॉन विलियम। (1876). *भारत में 1857 का विद्रोह का इतिहास* (पृ. 150–200). लंदन: लॉन्गमैन।
9. मेलीसन, जी. बी. (1880). *1857 के भारतीय विद्रोह का इतिहास* (पृ. 180–230). लंदन: मैकमिलन।
   भारत सरकार। (1858). *1857 के विद्रोह पर आधिकारिक रिपोर्ट* (पृ. 25–75). कलकत्ता: गवर्नमेंट प्रेस।